# द्वितीय अध्याय

## निबंध - स्वरूप परिभाषा और प्रकार -- निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद

# द्वितीय अध्याय

## निबंध - स्वरूप परिभाषा और प्रकार -- निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद --

### प्रस्तावना --

निबंध आधुनिक युग की देन है । निबंध का इतिहास लगभग अस्सी वर्षों का मिलता है । हिन्दी साहित्य में निबंध की कोई परम्परा नहीं मिलती । पाश्चात्य साहित्य में निबन्ध की शुरुआत फ्रांसीसि मिकेल मॉन तेन से हुई । अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव ही हिन्दी निबंध साहित्य के प्रारंभ का कारण बना । अंग्रेजी ' निबंध ' शब्द के अर्थ में निबंध, प्रबंध, रचना, लेख आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है । आधुनिक युग में निबंध के अर्थ में प्रबंध, ललित - निबंध , लेख, संदर्भ आदि शाब्दिक पर्याय मिलते हैं । हिन्दी में निबंध शब्द का प्रयोग ' निबंध ', ' ललित-निबन्ध ' और ' प्रबंध ' के अर्थ में किया जाता है । निबन्ध और प्रबंध में बहुत अंतर होता है । निबंध में व्यक्तित्व का स्थान निश्चित होता है । प्रबंध की व्याप्ति गंभीर और खोज सम्बन्धी सूक्ष्म अध्ययन से होती है । खोज संबंधी विषय को लेकर लिखा गया प्रबंध निबंध से बहुत दूर हो जाता है ।

मॉन:तेन ने ' आत्माभिव्यक्ति ' के साधन के रूप में लानेवाली रचना को निबंध कहा है । '[1] निबंध के बारे में रॉबर्ट लिण्ड का मत है ' रास्ते पर

पड़ी हुई सुई पर लिखा गया निबन्ध भी जीवन के किसी अज्ञात अनपेक्षित अंश को उजागर कर सकता है । ` हडसन का मत है --[२] should not attempt too much ` बहुत अधिक कहने का अनाग्रह मानी थी । `[३] आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबंध के बारे में अपना मत प्रकट करते हुए कहते हैं -- ` यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है ।[४]

हिन्दी गद्य साहित्य में जिस प्रकार कहानी,उपन्यास,नाटक और एकांकी ने योगदान दिया है उसी प्रकार निबंध ने भी अपना स्थान निश्चित किया है । भारतेंदु काल के आरंभ से ही निबंध साहित्य की शुरुआत हुई थी । इस काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी, राधाचरण गोस्वामी आदि निबंधकारों ने तत्कालीन समस्याओं पर प्रकाश डाला है । ऐसा लगता है इस काल के निबन्धकारोंने तत्कालिन समाज का सामूहिक चित्रण करने का प्रयत्न किया और निबंधों द्वारा एक नये समाज निर्माण की घोषणा की है । इस काल के निबंधों का लक्ष्य प्रचारात्मक और शिक्षात्मक था ।

द्विवेदी-कालीन ` युग ` में शिक्षात्मक और नीति विषयक बातें अधिक मिलती हैं । शुक्ल युग में भावात्मक तथा विचारात्मक निबंधों का विकास हुआ । इसमें भावात्मक शैली में निबन्ध लिखनेवालों में ` प्रसाद `, ` वियोगीहरि `, ` डॉ.रघुवीर सिंह `, ` शान्तिप्रिय द्विवेदी ` आदि हैं । विचारात्मक निबंधों का पूर्ण विकास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों में मिलता है । भावात्मक निबंधों में मानवीय जीवन का सूक्ष्म पहलू भावात्मक शैली में प्रकट किया है । इस काल की विशेषता यह है कि इसमें अधिकतर समीक्षात्मक निबंध लिखे गये । ललित निबंध का भी प्रादुर्भाव हुआ । प्रसाद के काव्यात्मकता का प्रभाव इस काल के भावात्मक निबंधों में दिखायी देता है । आधुनिक काल में निबंधों में इतिवृत्तात्मकता,वर्णनात्मकता,भावात्मकता, व्यंग्यात्मकता,प्रशंसात्मकता आदि कई शैलियों का सुन्दर समन्वय मिलता है । निबंधों में भारतीय इतिहास,पुरातत्व,संस्कृति,दर्शन,कला आदि विषयों पर

निबंध लिखे गये हैं । संस्मरणात्मक, रेखाचित्र तथा संस्मृतियों के रूप में भी निबंध लिखे गये हैं ।

भावात्मक शैली का सुन्दर समन्वय डॉ. नगेन्द्र के 'विचार और अनुभूति' तथा 'विचार और विवेचन' शीर्षक निबंध संग्रहों की रचनाओं में मिलता है । भारतेन्दु कालीन भावात्मक निबन्धों का विकसित रूप इस काल के डॉ. रघुवीर सिंह, शान्तिप्रिय द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, आदि के भावप्रधान निबंधों में मिलता है । भावात्मक निबन्धों की परम्परा का उत्कर्ष डॉ. रघुवीर सिंह कृत 'शेष स्मृतियाँ' में संग्रहित निबंधों में मिलता है । उन्होंने मुगलकालीन घटनाओं पर अत्यन्त भावात्मक शैली में सुन्दर निबन्ध लिखे हैं । उनके आरम्भिक निबन्धों में भी उनकी भावात्मक शैली के दर्शन मिलते हैं । सन १९३० में प्रकाशित 'यौवन के द्वार पर'[5] में उनकी भावुकता का दर्शन होता है । इस निबन्ध में लेखक अपने जीवन के द्वार पर खडे रहकर विगत जीवन की मधुर स्मृतियों को याद करता है । अतीत से उनका यह प्रेम उनके आगे के निबन्धों में स्पष्ट दिखायी देता है । ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर अपनी भावात्मक शैली द्वारा पाठकों के हृदय को हिलानेवाली भावानुभूति अत्यन्त कुशल है । उन्होंने 'तीन कब्रें' निबन्ध में मानव जीवन की व्याख्या इस रूप में की है -- 'संसार के लिए मानव जीवन एक खेल है, मनोरंजन की एक अद्भुत सामग्री है। मानव हृदय एक कौतुहलोत्पादक वस्तु है । उसे तडपते देखकर संसार हँसता है, उसके दर्द को देखकर उसे आनन्द आता है और यदि संसार को मानव हृदय से भी अधिक आकर्षक कोई दुसरी वस्तु मिल जाय तो वह उसे भी भूला देगा । कितनी बेदर्दी , कितनी निष्ठुरता । संसार का यह खिलवाड चोट खाए हुए मनुष्य को रुला देता है ।'[6]

हिन्दी साहित्य में निबंध आधुनिक युग की देन है । निबंध के विकास के साथ-साथ अन्य गद्य साहित्य के उन्नति या प्रगति में चालना प्राप्त हुई है ।

निबंध का अर्थ ---

निबन्ध संस्कृत भाषा का शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार की गयी

है - नि बन्ध ल्युट - निबन्ध्यते अस्मिनवति,अधिकरणो निबन्धम अर्थात् ऐसी रचना जिसमें विचार बाँधा अथवा गूँथा जाता है । शब्दकल्पद्रुम में -- `निबन्धातीति निबन्ध - अर्थात् कसा हुआ,गढा हुआ,बँधा हुआ । संस्कृत साहित्य में - निबन्ध प्राय: साहित्यिक रचना,टीका,या कृति के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है, जिसमें विशेष रूप से बन्ध सम्यक् कसाव और संगठन हो । पाश्चात्य फ्रांसीसी निबंधकार मिकेल मान:तेन और बेकन दोनों ने अंग्रेजी शब्द `एसे ( essay ) का प्रयोग `एसेइस` किया जिसका अर्थ है प्रयास या प्रयत्न या परीक्षण करना । व्युत्पत्ति के दृष्टि से निबन्ध शब्द` बन्ध` धातु में `नि` उपसर्ग और `घ ग` प्रत्यय के योग से बना है । `बंध `का अर्थ है --`बाँधना, रोकथाम करना,बंधन आदि । `नि `का अर्थ है - निश्शेषण या पूर्णतया और` घ ग` का अर्थ है - संग्रह` देवी सँपाद्विमोक्षाय निबंधायासुरी मता ,गीता १६।५ में `निबंधाय` शब्द का अर्थ है बाँधने के लिए । `प्रत्यक्ष श्लेषामय प्रबंध विन्यास वैदग्ध निधि निबन्धम् सुबंधु वासवदत्ता मंगला चरण - यहाँ `निबन्ध का प्रयोग` ग्रन्थ` के लिए तथा `प्रबंध` का कुशल रचना` के अर्थ में किया गया है । अंग्रेजी शब्द एसे ( Essay ) लैटिन के `एग्जीनियर` शब्द से व्युत्पन्न हुआ है । `एग्जीनियर का अर्थ है - निश्चयात्मक परीक्षण ।

निबन्ध की परिभाषा --

भारतीय निबंधकारोंने निबंध की व्याख्या अपनी अपनी मतानुसार दी है --

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल --

` निबन्ध व्यवस्थित एवं मर्यादित विचार प्रधान गद्य-रचना है । जिसमें विशिष्ट शैली का प्रयोग और लेखक के निजी अनुभव और चिंतन की विशेषता के कारण व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा भी रहेगी ।`

२. जयनाथ नलिन --

` निबंध स्वाधीन चिंतन और निश्चित अनुभूतियोंका सरस सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन है ।`

३ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी -

` भावों या विचारों की प्रधानता तथा शैली की रमणीयता के योग से जिस नवीन साहित्य का प्रचलन हुआ उसे ही निबंध साहित्य की संज्ञा दी गयी । `

४ डॉ. गुलाबराय -

` निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता साथ ही आवश्यक संगीत और सुसम्बध्दता के साथ किया गया हो । `

५ डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय -

` निबन्ध से तात्पर्य सच्चे साहित्यिक निबन्धों से है, जिसमें लेखक अपने आपको प्रकट करता है, विषय को नहीं । विषय तो केवल बहाना मात्र होता है । `

६ डॉ. मोहन अवस्थी -

` निबन्ध वह छोटी, ललित गद्य-रचना है, जिसमें विषय-प्रतिपन्नता के साथ हृदय का निर्बन्ध विवरण हो । `

पाश्चात्य निबंधकारों के मतानुसार व्याख्या निम्नलिखित दी जाती है ।

७ निबंध का जनक मिशेल मौन:तेन के नुसार --

` निबंध विचारों, उध्दरणों और कथाओं का मिश्रण है । `

८ इग्लैन्ड का निबंधकार जॉनसन ने व्याख्या की है --

` निबंध, मन का आकस्मिक और उच्छृंखल आवेग - असम्बन्ध और चिन्तनहीन बुध्दि विलास है । `

९ क्रेवल - ` निबंध लेखन कला का बहुत प्रिय साधना है । जिस लेखक मे न प्रतिमा है और न ज्ञान - वृध्दि की जिज्ञासा, निबन्ध लेखन उसको भी अनुकूल पडता है और उस पाठक को भी भाता है । जो विविधता तथा हल्की रचना में आनन्द लेता है । `

१० हडसन -- 'The true essay is essentially personal."

११ डब्लू. ई. विलियम्स --

` निबन्ध की संक्षिप्त परिभाषा यह है कि वह गद्य रचना का एक प्रकार है जो बहुत ही छोटा होता है । उसमें वर्णन नहीं होते । कभी-कभी अपनी बातों को सिध्द करने के लिए निबंधकार प्रसंग की अवतारणा करते हैं, पर उनका मूल उद्देश्य कथा कहना नहीं होता है । निबन्ध लेखक का मुख्य कार्य सामाजिक दार्शनिक आलोचक या टिप्पणीकार जैसा होता है ।

१२. बेकन --

" निबंध विचारों का वह संक्षिप्त विवेचन है जिसमें बुध्दि-तत्व की प्रधानता होती है ।" तथा " निबन्ध कुछ गिने-गिने पृष्ठों के लघुविस्तार में होना चाहिए जिसमें सारगर्भित ठोस विचारों का निर्देश हो ।"

१३. निबंधकार एडीसन --

" निबंध में विचारधारा तरल और मिश्रित होती है । उसका प्रवाह कभी साधारण उपदेशात्मकता की ओर उन्मुख रहता है । कभी वैयक्तिक आत्मभिव्यंजना की ओर ।"

निबंध का स्वरूप --

निबंध का स्वरूप परिभाषाओंके आधार पर निश्चित किया जा सकता है । फिर भी अधिक विस्तृत रूप से जानने के लिए उसके तत्वों को जानना आवश्यक है । प्रारम्भ में निबंध पद्य में लिखे जाते थे लेकिन आधुनिक युग में वह सिर्फ गद्य-विधा बन गयी है । प्रारंभिक निबंधों में विषय को महत्व देते थे किन्तु आज के निबन्धों में व्यक्तित्व को ही अधिक महत्व देते हैं । व्यक्तित्व का झलकना निबन्धों की विशेषता है इसी कारण निबंध का आकार सीमित था लघु होना चाहिए । प्राचीनता और आधुनिकता में फर्क दिखायी देता है । समयानुरूप किसी भी विधा का ढाँचा बदलता रहता है । इसी कारण आज के युग में मॉन्तेन के निबंधों को निबन्ध नहीं मानते क्योंकि आधुनिक निबन्ध का स्वरूप इतना लघु और सीमित है कि किसी विषय का विवेचन करना कठीन है । निबन्धो केअन्तरंग वार्तालाप या गपशप स्वरूप प्राप्त हो चुका है । निबन्धों में लेखक का व्यक्तित्व उभरना चाहिये । विषय की अपेक्षा विषय का ज्ञान निबंध का रूप धारण कर लेता है । गार्डनर ने ठीक ही कहा है कि --
" Any peg will do to hang your not on that hat is the king."[7]

लेखक अपने निबंधों द्वारा समीक्षा या विवेचन नहीं करता विषय के बारे में मत या प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करता है । निबन्ध पांडित्य दर्शन का उपादेय नहीं बल्कि हृदय से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु है । प्रभावशाली भाषा शैली के माध्यम से अपने भाव या विचार पाठकों तक पहुँचाना उसका काम है जिसके लिये वह उध्दरण, उदाहरण, कथाओं आदि का सहायता ले सकता है और अपनी मौलिक अचूक तर्कशैली को अपनाता है । जितने लेखक होंगे उतनी भाषाशैली अलग - अलग होगी । निबन्ध विषय-विवेचन के पूर्णता की माँग नहीं करता, अपूर्णता में ही उसकी सफलता निहित है ।

डॉ. मु.व.शहा ने निबन्ध के कुल चार तत्व माने है - व्यक्ति सापेक्षता, स्वच्छन्दता, कलात्मकता और संक्षिप्तता । निबंध के परिभाषाओं के आधार पर कुलमिलाकर आठ तत्व है (१) व्यक्तित्व (२) कसावट (३) हलकापन (४)पूर्णता (५) स्वच्छन्दता (६) विषय का आधार (७) प्रवाह और (८) उद्देश्य । निबंध की परिभाषा लेखकों के मत की व्याख्या है । निबंध का कोई निश्चित स्वरुप नहीं दिखायी देता । उनके तत्व अलग अलग है और उसी केअनुसार स्वरुप निश्चित करना कठीण बात है । क्योंकि निबंध की परिभाषा और स्वरुप एक विवादास्पद विषय रहा है । निबंध का स्वरुप जानने के लिए उनके तत्वों का विवेचन करना अधिक उपयुक्त होगा ।

१) विषय या वस्तु --

निबंधकार अपने मतानुसार किसी भी विषय पर निबन्ध लिख सकता है ।

निबन्ध में लेखक अपने व्यक्तित्व को प्रकट करता है, लगता है पाठक के साथ गपशप ही हो रही है । गपशप के माध्यम से निबंधकार पाठक के साथ तादात्म्यता स्थापित कर सकता है । निबन्ध में उदाहरण, उध्दरण, कथाओं आदि द्वारा प्रभाव उत्पन्न कर सकता है । सीमित आकार में विषय को चित्रित कर सकता है और आदि, मध्य तथा अंत का उचित निर्वाह करता है । इन्हीं के द्वारा आवश्यक चर्चा, विकास तथा प्रभाव निर्माण करता है । जिस तरह लेखक विषय

को प्रकट करता है उस पद्धति पर निबन्ध का रूप निर्भर होता है । निबन्ध के रूप के अनुसार प्रतिपादन पद्धति-इसे यों भी कहा जा सकता है कि लेखक की मनोवृत्ति प्रतिपादन की विधि अत: निबंध का रूप भी नियंत्रित करती है ।

२) व्यक्तित्व --

निबन्ध की आत्मा ` व्यक्तित्व ` है । लेखक का व्यक्तित्व उसके बुध्दितत्व और भाव-तत्व पर निर्भर करता है । लेखक का अध्ययन, चिंतन, मनन, गाम्भीर्य, तर्क, औचित्य, यथार्थता उसके बुध्दितत्व को निर्मित करनेवाले तथ्य है । इनके बल पर वह संक्षेप में बहुत कुछ कह जाता है । लेखक का अनुभव, रुचि, जीवन-दर्शन उसकी सौन्दर्य-दृष्टि अथवा भावात्मकता को निर्धारित करनेवाली बातें हैं । लेखक का व्यक्तित्व ही निबन्ध के रूप एवं प्रतिपादन पध्दति को निश्चित करता है । इसी पर ही निबन्ध का उद्देश्य भी निर्भर रहता है ।

३) भाषा शैली ---

निबन्धकार के व्यक्तित्व के अनुरूप शैली होती है । शैली पर ही लेखक का समस्त व्यापार निहित होता है । लेखक सुलझे हुए विचार अपनी अलग शैली में प्रकट करते हैं । शैली ही लेखक की पहचान होती है । गपशप की भाषा, शिष्टाचार से दूर ,सरल, स्पष्ट होती है । औचित्य भी इसका प्रमुख गुण है । लेखक की भाषा पाठक को समझाने योग्य होनी चाहिए । वह प्रसादपूर्ण शैली होनी चाहिए और उसमें प्रवाह हो। आवश्यकतानुरूप उसमें संगीतात्मकता एवं बाह्य सौन्दर्य भी समाविष्ट होना चाहिए । प्राय: भिन्न भिन्न लेखकों की शैली विशिष्ट हो जाती है । विषय एवं वृत्ति के अनुसार शैली में भिन्नता आना अनिवार्य है ।

उपर्युक्त तत्वों के विवेचन के आधारपर हम कह सकते हैं कि यही निबन्ध का स्वरूप मानना चाहिए । निबन्ध का स्वरूप निश्चित करना विवादास्पद

विषय है क्योंकि लेखक, काल और उनकी शैली के अनुसार ही उसका स्वरूप निश्चित हो जायेगा ।

निबन्ध के प्रकार --

निबन्ध के अर्थ, स्वरूप और परिभाषा देखने के पश्चात [illegible] प्रकार देखना क्रमप्राप्त है । निबन्ध के प्रकार अनेक दृष्टियों से देखे जा सकते हैं । जैसे -- व्यक्तिप्रधान और विषय प्रधान की दृष्टि से, गद्य-शैली और प्रवृत्ति की दृष्टि से । विषय की कोई निश्चित सीमा नहीं है । अनेक प्रकार के साहित्य-समालोचना, पुरातत्व, इतिहास, धर्म, दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान, व्यापार, शिक्षा, जीवन चरित, संस्कृति आदि अनेक विषयों पर निबंध लिखे गये हैं । इसी कारण सामान्यतया निबन्ध चार प्रकार के माने गये हैं । आधुनिक काल की दृष्टि से निबन्ध तीन प्रकार के माने गये हैं ।

१) वर्णनात्मक निबन्ध --

जिस निबन्ध में वर्णन की प्रधानता हो वह निबन्ध वर्णनात्मक है । इस प्रकार के निबन्धों में किसी स्थान, देश, प्राकृतिक दृश्य आदि का चित्र वर्णित रहता है । इसमें विचार, अनुभूति, कल्पना वर्णन को प्राणवान , मोहक, आकर्षक, और रसीला बनाने के लिए कार्यरत रहती है । इसमें सभी तत्व साधन के रूप में चित्र को सामने लाते हैं वही चित्र निबन्ध का साध्य है और फल है, रस, अनुभूति, लीनता । कलाकार अपनी लेखनी तूलिका द्वारा सजीव चित्र उपस्थित करता है । वर्णन में लेखक का व्यक्तित्व उभरना चाहिये । जिस परिस्थिति को लेखक उपस्थित करे, उसके प्रति पाठक की भावात्मकता जागृत हो और वह आनन्दानुभूति प्राप्त कर सके । उपेक्षित साधारण वस्तु को कला का साध्य बनाना कलाकार की महानता है ।

वर्णनात्मक निबन्ध में कल्पना तत्व को अधिक महत्व प्राप्त हुआ है क्योंकि लेखक कल्पना द्वारा अन्तर्बाह्य रस का स्वाद अपनी रचना में निर्माण कर

सकता है । कल्पना के साथ भावात्मकता या रागात्मकता भी होनी चाहिये । इसी कारण विवेचन में सरलता रहती है । कल्पना और भावनाओं के माध्यम से वस्तुओं या घटनाओं का वर्णन करते समय उसमें आत्मीयता उभरने की कोशिश की जाती है । इस प्रकार के निबन्धों में सहजता और सरलता के माध्यम से ही आत्मीयता उभारना आसान कार्य नहीं है । इसमें महन चिंतन एवं मौलिक विचारों की आवश्यकता नहीं होती ।

२) विवरणात्मक निबन्ध --

जिस निबन्ध में कथा की प्रधानता होती है वह विवरणात्मक निबन्ध है । इस प्रकार के निबन्धों में आत्मीयता का होना आवश्यक है । इसमें कालगत विवरण रहता है । विवरणात्मक निबन्ध में वस्तु के क्रियाशील रूप का निरूपण होता है । इसमें किसी घटनाओं का हाल का विवरण रहता है इसीलिए इसे ऐतिहासिक : भी कहते हैं । विवरणात्मक निबन्धों में कथा का होना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कथात्मकता ही इसकी विशेषता है । ऐतिहासिक विवरण में निबन्धकार रागात्मकता भर देता है । इतिहास अपनी घटनाओं के प्रति उदासीन रहता है तो निबन्ध उनके रस-विरस में लीन रहता है । वर्णन प्रधान लेखक से अधिक विवरणात्मक निबन्धकार का कार्य कठीन और कलात्मक हो जाता है । आन्तरिक चित्रण और भावों के बिम्बों को खड़ा करने के लिए अधिक सूक्ष्म और सचेत कल्पना और अनुभूति चाहिये । इसमें प्रसाद शैली की ही प्रधानता रहती है । निबंधकार विवरणात्मक शैली का आधार लेकर कल्पना और अनुभूति द्वारा घटनाओं का विवरण करता है । घटनाएँ चाहे युध्द की हो, चाहे शिकार की, इतिहास या काल्पनिक हो, निबन्धकार उनको चक्षुवे सत्य बना देता है । नीरस तथा केवल तथ्ययुक्त वृत्त को या घटना को प्राण---वान , सरस ,तथा हृदयंगम बनाने का कार्य यही शैली करती है ।

लेखक का कौशल खिलने और निखरने के लिये पर्याप्त स्थान रहता है । इसमें निबन्धकार को अपना व्यक्तित्व अधिक सशक्त और प्रभावशाली रूप में

लाना पडता है इससे पाठक अधिक रस प्राप्त कर सके । काल्पनिक वृत्त,आत्मकथा, आख्यान,संस्मरण,जीवन-चरित्र था रेखाचित्र आदि इसमें लिये जा सकते हैं ।

३) विचारात्मक निबन्ध --

विचारात्मक निबन्ध में बुध्दि की प्रधानता होती है । इस प्रकार के निबन्धों में किसी तथ्य का उद्घाटन, विवेचन,या विश्लेषण होता है ऐसे निबंधों में बुध्दि विचारात्मक शैली का आश्रय लेती है । विचारात्मक निबंध में लेखक समाज - परम्परा,साहित्यिक आस्था,नैतिक शास्त्र पर स्वाधीन अनाभिभूत और मौलिक विचार ... प्रकट करता है । इसमें बातों की सूक्ष्मता ,तर्क-योजना, विश्लेषण-पध्दति की परख और पाठक को उत्साहित करने की कसौटी होती है । इस प्रकार के निबंधों में बुध्दि को प्रधानता देते हैं और भावना और कल्पना के प्रति उदासीनता प्रतीत होती है ।

लेखक के व्यक्तित्व का समावेश इसमें निश्चय ही होता है । निबन्ध की गम्भिरता और नीरसता हटाने के लिए हास्य-व्यंग्य का पुट दिया जाता है । विचारों को सजा-सँवार कर प्रस्तुत करने में ही लेखक की सिध्दि मानी जाती है । इसमें दो प्रकार की शैली होती है -- समाज प्रधान और व्यास प्रधान । समास प्रधान शैली में लेखक कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक वस्तु प्रस्तुत करता है । व्यास शैली में लेखक की विस्तार के साथ समझा-समझा कर कहने की प्रवृत्ति होती है ।

४) भावात्मक निबंध --

भावात्मक निबंध में भावतत्व और कल्पना तत्व की प्रधानता रहती है । हृदय की उदात्त अनुभूति,तीव्र भावनाएँ और भावुकता की चरमता इस प्रकार के निबंध में मिलती है । इसी प्रकार के निबंध में लेखक की अनुभूति गहन और सघन ,भाव तीव्र और आकुल,प्रकाशन स्पष्ट और निश्चल होने के कारण सफलता पाती है । भावात्मक निबंध एक भावुक स्वस्थ हृदय का आत्मनिवेदन

है, पागल का प्रलाप नहीं ।[26] इसमें शैली का प्रवाह वेगवान रहता है और भाषा की तरलता रहती है ।

भावात्मक निबंधों के बारे में कुछ समीक्षकों में विवादास्पद विषय रहा है । कुछ समीक्षक इसे `गद्यकाव्य` या `गद्य-गीत` की संज्ञा देते हैं । `गद्यकाव्य` नाम देना नासमझी की मौलिक भूल है । इसकी व्याप्ति व्यापक है कहानी,नाटक, उपन्यास,निबन्ध,स्केच, आत्मचरित्र सब इसके अलग अलग रूप है । भावात्मक गद्यखण्ड को `गद्यकाव्य` नाम भ्रामक और अर्थहीन है । साहित्य समीक्षकों द्वारा यह नाम प्रयुक्त देख हास्यास्पद प्रतीत होता है ।

आधुनिक काल के निबन्ध तीन प्रकार के हैं ---

१) <u>शास्त्रिय वैज्ञानिक निबंध --</u>

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है । इस काल में शास्त्रीय वैज्ञानिक निबंध लिखे जा रहे हैं । इस प्रकार के निबंध में वस्तुगत विवेचन प्रमुख रूप से प्रस्तुत किये जाते हैं । ज्ञान-संपन्न करने के लिए शास्त्रीय पध्दति की प्रधानता होती है । मत स्थापन,तर्क पुरस्सर प्रमाण, उदाहरण,दृष्टान्त तथा मतमतान्तरों का खण्डन,मण्डन किया जाता है । पं.रामचंद्र शुक्ल के भावों और मनोविकारों संबंधी निबंध इसी प्रकार के है ।

२) <u>साहित्यिक निबंध --</u>

आधुनिक काल में साहित्यिक लेख का प्रभाव अधिक हो रहा है । इस प्रकार के निबंधों में लेखक किसी भी विषय को साहित्यिक संदर्भों में प्रस्तुत करता है । साहित्यिक निबंधों के दो प्रकार होते है - समीक्षात्मक और सामान्य । समीक्षात्मक निबंधों में साहित्यिक प्रश्नों-प्रवृत्तियों,कृतियों या कृतिकारों की सैध्दान्तिक और व्यावहारिक आलोचना होती है ।

सामान्य साहित्यिक निबंधों में लेखक किसी भी विषय को साहित्यिक संदर्भों से युक्त करता है । बाबू गुलाबराय और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनेक निबंध इस प्रकार के हैं ।

७) ललित निबंध --

नयी कहानी और नयी कविता के वजन पर नया निबंध जो उभर रहा है वह है ललित निबंध । इसमें लेखक व्यक्ति-प्रधान होता है । विचारात्मकता का स्थान भावात्मकता लेती है । ललित निबंध की सहज स्फीत धारा उछलती दिखायी पडती है । ललित निबंधों का स्वरुप निखारनेवाले लेखक हैं - डॉ. विद्यानिवास मिश्र और कुबेरनाथ राय ।

अत: हम अनुमान कर सकते हैं कि निबंध की व्याप्ति या प्रकार कितने हैं ? निबंध के प्रकार को देखने के पश्चात् इस बात पर प्रकाश पडता है कि प्राचीन निबंध और आधुनिक निबंध के प्रकार में भिन्नता है । जिस प्रकार युगानुकूल निबंधकार अपनी रुचि और वृत्ति के नुसार ही निबंध की रचना करते हैं । सामान्यतया सभी निबंधकारों ने निबंध को चार विभागों में बाँटा है परन्तु जयनाथ नलिन ने निबंध के पाँच प्रकार माने हैं । आधुनिक काल में निबंध के तीन प्रकार हैं । इसीसे हम कह सकते हैं कि कुलमिलाकर निबंध को सात प्रकारों में बाँटा जा सकता है । आधुनिक काल में सात प्रकार में निबंध लिखे जा रहे हैं । इसी कारण निबंध को गद्य-विधा में निश्चित स्थान प्राप्त हुआ है ।

निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद ---

साहित्य के हर एक विधा में साम्य तथा भेद होते हैं । जिस प्रकार कहानी उपन्यास और नाटक इनके तत्व एक समान होते हुए भी इनमें परस्पर साम्य तथा भेद है । किसी वस्तु या पदार्थ को लेकर तुलना करते समय हम उसकी अच्छाई क्या है और बुराई क्या है ? इससे हम उस वस्तु में होनेवाले साम्य तथा भेद की जानकारी प्राप्त करते हैं । निबंध और अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना करने

पर उसमें जो समानता तथा असमानताएँ हैं या निबन्ध का अन्य विधाओं में प्रभाव और अभाव क्या है इसका विवेचन करना अत्यंत आवश्यक है ।

किसी भी विधा की अन्य साहित्यिक विधाओं से तुलना करना उनकी एकरूपता की पहचान है । कहानी,नाटक,एकांकी,प्रबन्ध-काव्य और उपन्यास में तत्वों की समानता होने पर भी वह स्वतंत्र और पृथक हैं । उसी तरह उपन्यास और महाकाव्य एक होते हुये भी उसमें विभिन्नता है । किन्हीं दो विधाओं की तुलना करने पर उनका अंतर स्पष्ट हो जाता है । कभी कभी समानता दिखायी देती है परन्तु भेद जानना बहुत कठीण होता है । निबंध और अन्य साहित्यिक विधाओं से तुलना करके उसकी समानता और विभिन्नता पर प्रकाश डालना महत्वपूर्ण है --

१) <u>निबंध और प्रबन्ध</u> --

निबन्ध और प्रबन्ध में समानता माननेवाले विद्वानों में यह विषय विवादास्पद बन गया है । दो विधाओं में होनेवाली विशेषताएँ समान क्यों न हो परंतु वह दोनों अपने स्थान पर भिन्न विधा है । श्यामसुन्दर दास ने निबन्ध को प्रबन्ध का पर्याय माना है । प्राचीन संस्कृत परम्परा के अनुसार निबन्ध केवल अभिव्यक्ति का साधन बन गया है । निबन्ध और प्रबन्ध के शरीर-संगठन,बाह्य - स्वरूप, वर्ण्य विषय मिलते जुलते हैं । कभी कभी आकार और शैली समान रूप हो जाते हैं ।

निबन्ध और प्रबन्ध में जिस प्रकार समानता मिलती है उसी प्रकार उसके भेद भी मिलते हैं । निबन्ध की विशेषता है - व्यक्तित्व का सशक्त प्रकाशन करना । यह व्यक्तित्व ही निबन्ध को प्राणवान शैली, भाषा में संक्षिप्तता और तीव्र प्रवाह प्रदान करता है । प्रबंध में व्यक्तित्व की आवश्यकता नहीं है । निबन्ध आकार में छोटा होता है तो प्रबन्ध दस-बीस गुणा से बडा होता है । प्रबन्ध में समाजशास्त्र,लोक-संग्रह और

पुस्तकीय ज्ञान का प्राधान्य है

१) कथा और निबन्ध --

निबंध एक ऐसी विधा है जिसके अंश कहीं न कहीं कथाओं में बिखरे हुये मिलते हैं । उपन्यास हो या कहानी इसमें लेखक रस-भोक्ता बनकर अपने भावों को उँडेल देता है । किसी स्थान,युग और परम्परा के प्रति वह भावात्मक अनुभूतियाँ बरसा देता है । इसी तरह कथाकार निबंधकार का चोला पहन लेता है । कथाओं में निबंध के समान भावात्मक वर्णन भी मिलते हैं । कथाकार अपनी रचना में कभी कभी सुन्दर निबंध खण्ड की निर्मिति करता है । कथा और निबंध में इतनीही समानता मिलती है ।

निबन्ध और लेख --

कथा, उपन्यास और निबन्ध में स्वरूप,आकार और अधिकार सीमा के विचार से असमानता ही है । फिर इसकी तुलना और अंतर को स्पष्ट करने का सवाल ही नहीं उठता । लेकिन इतना जानना आवश्यक है कि इसमें समानता है तो इसमें भेद भी है । इनमें जो साम्यता है - वह है व्यक्तित्व और निजी भावनाओं को व्यक्त करते हैं । इसके बिना समान जीवन व्याख्या और मानव हित का आदर्श लिए साहित्य तीर्थ के यात्री हैं ।

निबन्ध और लेख में भेद अधिक और साम्य कम दिखायी मिलता है । लेख अंग्रेजी के `आर्टिकल` शब्द का पर्याय मानते हैं । भारतेन्दु युग में इस लेख को ही निबन्ध का पर्याय मानते थे क्योंकि अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं में लेख छपते थे उसमें निबंध का अंश मिलता था । डॉ.गुलाबराय और डॉ.श्रीकृष्ण लाल,पं. विश्वनाथ प्रसाद आदि लेखकोंने लेख को निबन्ध का पर्यायी शब्द

मानकर इसका प्रयोग किया है ।

प्रारंभ में पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले लेख को निबन्ध का रूप ही मानते थे । परन्तु लेख और निबन्ध में भेद है । लेख गद्य-रचना का एक विशेष प्रकार है । लेख में केवल लिखने की प्रक्रिया रहती है । निबन्ध में क्रिया का शिल्प रहता है । लेख का महत्व सामयिक होता है, उसमें लेखक का व्यक्तित्व ही नहीं होता । निबंधकार और लेख लिखनेवाले की मन:स्थिति में अंतर होता है । अधिकतर लेखक समय के अभाव से लेख गडबडी में या शीघ्रता से लिखते हैं क्योंकि इनका सम्बन्ध पत्रकारिता से आता है । निबन्ध में सहजता और सुव्यवस्था होती है लेख में नहीं होती । निबन्ध में 'अवकाश' या 'समय' रहता है लेखों में 'समय' की रक्षा या 'पाबंदी' होती है । इसी कारण लेख शीघ्र तात्कालिक रचना कार्य है ।

अत: निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधा का स्वतंत्र और अलग स्थान निश्चित है । उपर्युक्त विवेचन से उनमें होनेवाले साम्य तथा भेद का स्पष्टीकरण हुआ है । व्यक्तित्व की सहज अनुभूति की अभिव्यक्ति और कलात्मकता निबन्ध को एक स्वतंत्र सार्वभौम सत्ता प्रदान करती है, अत: इन सभी विधाओं को एक ही मानना असंगत होगा ।

## निष्कर्ष ---

आधुनिक साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव है ऐसे मानने में गलत फहमी नहीं होगी । निबंध आधुनिक युग की देन है । निबन्ध की परिभाषा किसी एक सूत्र रूप में निश्चित नहीं की जा सकती । क्योंकि निबन्ध में व्यक्तित्व का प्रकाशन रहता है । पुराने निबन्धों में 'विषय' का महत्व रखते थे, नये निबन्ध में 'व्यक्ति' को अधिक महत्व प्राप्त हो रहा है । निबंध के प्रकार के अनुसार हमें लगता है कि निबंध एक गद्य-विधा है जिसमें सभी गद्य और पद्य का अंश बिखरे हुये मिलते हैं । निबंध में यद्यपि सभी विधा का समन्वय है फिर भी हिन्दी-साहित्य

के संसार में निबंध का अपना स्वतंत्र स्थान है। निबंध मानवीय भावनाओं का रक्षक है/क्योंकि निबंध मानवीय भाव-भावनाओं, विचार एवं उनकी स्मृतियों को सजीवता प्रदान करनेवाली एक मात्र विधा है। विशेषतः भावात्मक निबंध में जो सजीवता दिखायी देती है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

भावात्मक निबंधों में कलापक्ष और भावपक्ष का संयोग मिलता है। भावात्मक निबंधों का रूप अधिक निखरा हुआ है। अधिकतर लेखकों ने सुन्दर भावात्मक निबन्ध लिखने का प्रयास किया है।

## संदर्भ ग्रन्थ


| | लेखक | पुस्तक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १ | डॉ.बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे | हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास | २५३ |
| २ | डॉ.सु.ब.शाहा | हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन | ३२ |
| ३ | आचार्य रामचन्द्र शुक्ल | हिन्दी साहित्य का इतिहास | ५५८ |
| ४ | डॉ.रघुवीर सिंह | जीवन धुली | |
| ५ | - वही - | शेष स्मृतियाँ | १५ |
| ६ | डॉ.अभय प्रकाश | निबन्ध | ३ |
| ७ | जयनाथ नलिन | हिन्दी निबंधकार | २२ |